उर्द की खेती पर एडवाइजरी जारी

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. मनोज कटियार ने बीते दिन शुक्रवार को वर्षा ऋतु में उर्द की वैज्ञानिक खेती के विषय पर एडवाइजरी जारी की। डॉ.कटियार ने बताया कि उर्द कम समय में पक कर तैयार होने वाली फसल है इसमे अधिक तापमान सहन करने की क्षमता होती है। उन्होंने कहा कि उर्द का प्रयोग दाल के अलावा अन्य पौष्टिक आहार के रूप में किया जाता है।यह वायुमंडल की नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके उनकी उर्वरा

शक्ति को बढ़ाती है तथा इसका प्रयोग हरी खाद के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने कहा कि उड़द की प्रमुख प्रजातियां जैसे आजाद-1, आजाद-2, आजाद -3,शेखर -3, पंथ उर्दू 19 है। उन्होंने बताया कि बीज की बुवाई के लिए 12 से 16 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर आवश्यक है। लाइन से लाइन की दूरी 40 से 45 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 से 12 सेंटीमीटर रखी जानी चाहिए।

उन्होंने उर्वरक के बारे में बताते हुए कहा कि 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 40 किलोग्राम पोटाश, 20 किलोग्राम सल्फर एवं 20 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन किसी भी फफूंदी नाशक दवा से करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि किसान वैज्ञानिक विधि से खेती कर 12 से 15 कुंतल प्रति हेक्टेयर उर्द की पैदावार कर सकते है।

उर्द की वैज्ञानिक खेती कर लाभ कमाएं किसान

15/07/2023 (आज समाचार सेवा)

कानपुर, 14 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. आनन्द कुमार सिंह की ओर से जारी निर्देश के क्रम में आज दलहन अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार ने वर्षा ऋतु में उर्द की वैज्ञानिक खेती के विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि उर्द बहुत कम समय में पक कर तैयार होने वाली फसल है तथा अधिक तापमान सहन करने की भी क्षमता है। डॉ कटियार ने बताया कि उड़द का प्रयोग दाल के अतिरिक्त अन्य पौष्टिक आहार के रूप में किया जाता है।यह वायुमंडल की नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके उनकी उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाती है। तथा इसका प्रयोग हरी खाद के रूप में भी किया जाता है। उड़द की बुवाई के का समय जुलाई के अंतिम सप्ताह से अगस्त के अंतिम सप्ताह तक सर्वोत्तम रहता है। उन्होंने कहा कि उड़द की प्रमुख प्रजातियां जैसे आजाद-1, आजाद-2, आजाद -3,शेखर -3, पंथ उर्दू 19 प्रमुख है।उन्होंने बताया कि बीज की बुवाई हेतु 12 से 16 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर आवश्यक है। लाइन से लाइन की दूरी 40 से 45 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 से 12 सेंटीमीटर रखी जानी चाहिए।उन्होंने उर्वरक के बारे में कहा कि 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस,40 किलोग्राम पोटाश, 20 किलोग्राम सल्फर एवं 20 किलोग्राम ज़िंक प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है।

कार्यालय ग्राम

पत्रांक : मीमो/नि

समस्त अधिक

हाथीपुर विकास

हाथीपुर द्वारा अनु

वित्त/15 वां वित्त अ

के अंतर्गत निर्माण

निर्माण स्थल पर

आपूर्तिकर्ता दिना

अधोहस्ताक्षरी के

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 17 कानपुर, शनिवार 15 जुलाई 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

उर्द की वैज्ञानिक खेती कर लाभ कमाएं किसान : डॉ मनोज

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में दलहन अनुभाग के वैज्ञानिक डॉक्टर मनोज कटियार ने वर्षा ऋतु में उर्द की वैज्ञानिक खेती के विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि उर्द बहुत कम समय में पक

कर तैयार होने वाली फसल है तथा अधिक तापमान सहन करने की भी क्षमता है। डॉ कटियार ने बताया कि उड़द का प्रयोग दाल के अतिरिक्त अन्य पौष्टिक आहार के रूप में किया जाता है।यह वायुमंडल की नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके उनकी उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाती है। तथा इसका प्रयोग हरी खाद के रूप में भी किया जाता है। उड़द की बुवाई के का समय जुलाई के अंतिम सप्ताह से अगस्त के अंतिम सप्ताह तक सर्वोत्तम रहता है। उन्होंने कहा कि उड़द की प्रमुख प्रजातियां जैसे आजाद-1, आजाद-2, आजाद -3,शेखर -3, पंथ उर्दू 19 प्रमुख है।उन्होंने बताया कि बीज की बुवाई हेतु 12 से 16 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर आवश्यक है। लाइन से लाइन की दूरी 40 से 45 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 से 12 सेंटीमीटर रखी जानी चाहिए।उन्होंने उर्वरक के बारे में कहा कि 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस,40 किलोग्राम पोटाश, 20 किलोग्राम सल्फर एवं 20 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन किसी भी फफूंदी नाशक दवा से कर लें एवं राइजोबियम कल्चर से उपचारित के पश्चात बुवाई करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान वैज्ञानिक विधि से खेती करते हैं तो 12 से 15 कुंतल प्रति हेक्टेयर उर्द की पैदावार होगी और किसान लाभान्वित होंगे।

Sign in to edit and save changes to this file.

(हिन्दी दैनिक)
R.N.I. No. Utthin/2018/76731
(गांव देहात की खबर, शहर पर भी नजर)
दि ग्राम टुडे
उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश से एक साथ प्रसारित
वर्ष : 04 अंक : 311 देहरादून, शनिवार, 15 जुलाई 2023 मूल्य : 2 रुपये पृष्ठ - 8

उर्द की वैज्ञानिक खेती कर लाभ कमाएं किसान..डॉक्टर मनोज कटियार

(मीनाक्षी राहुल सोनकर)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज दलहन अनुभाग के वैज्ञानिक डॉक्टर मनोज कटियार ने वर्षा ऋतु में उर्द की वैज्ञानिक खेती के विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि उर्द बहुत कम समय में पक कर तैयार होने वाली फसल है तथा अधिक तापमान सहन करने की भी क्षमता है।

डॉ कटियार ने बताया कि उड़द का प्रयोग दाल के अतिरिक्त अन्य पौष्टिक आहार के रूप में किया जाता है।यह वायुमंडल की नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके उनकी उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाती है। तथा इसका प्रयोग हरी खाद के रूप में भी किया जाता है। उड़द की बुवाई के का समय जुलाई के अंतिम सप्ताह से अगस्त के अंतिम सप्ताह तक सर्वोत्तम रहता है। उन्होंने कहा कि उड़द की प्रमुख प्रजातियां जैसे आजाद-1, आजाद-2, आजाद -3,शेखर -3, पंथ उर्दू 19 प्रमुख है।उन्होंने बताया कि बीज की बुवाई हेतु 12 से 16 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर आवश्यक है। लाइन से लाइन की दूरी 40 से 45 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 से 12 सेंटीमीटर रखी जानी चाहिए।उन्होंने उर्वरक के बारे में कहा कि 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस,40 किलोग्राम पोटाश, 20 किलोग्राम सल्फर एवं 20 किलोग्राम ?िंक प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन किसी भी फफूंदी नाशक दवा से कर लें एवं राइजोबियम कल्चर से उपचारित के पश्चात बुवाई करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान वैज्ञानिक विधि से खेती करते हैं तो 12 से 15 कुंतल प्रति हेक्टेयर उर्द की पैदावार होगी और किसान लाभान्वित होंगे।

Title-code: UPHIN-48963

E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com

सत्य का असर

समाचार पत्र

15,07,2023 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल 9956834016

पत्रकार जीतेंद्र सिंह पटेल

उर्द की वैज्ञानिक खेती कर लाभ कमाएं किसान:- डॉक्टर मनोज कटियार

पत्रकार जीतेंद्र सिंह पटेल: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज दलहन अनुभाग के वैज्ञानिक डॉक्टर मनोज कटियार ने वर्षा ऋतु में उर्द की वैज्ञानिक खेती के विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि उर्द बहुत कम समय में पक कर तैयार होने वाली फसल है तथा अधिक तापमान सहन करने की भी क्षमता है। डॉ कटियार ने बताया कि उड़द का प्रयोग दाल के अतिरिक्त अन्य पौष्टिक आहार के रूप में किया जाता है।यह वायुमंडल की नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके उनकी उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाती है। तथा इसका प्रयोग हरी खाद के रूप में भी किया जाता है। उड़द की बुवाई के का समय जुलाई के अंतिम सप्ताह से अगस्त के अंतिम सप्ताह तक सर्वोत्तम रहता है। उन्होंने कहा कि उड़द की प्रमुख प्रजातियां जैसे आजाद-1, आजाद-2, आजाद -3,शेखर -3, पंथ उर्दू 19 प्रमुख है। उन्होंने बताया कि बीज की बुवाई हेतु 12 से 16 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर आवश्यक है। लाइन से लाइन की दूरी 40 से 45 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 से 12 सेंटीमीटर रखी जानी चाहिए।उन्होंने उर्वरक के बारे में कहा कि 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस,40 किलोग्राम पोटाश, 20 किलोग्राम सल्फर एवं 20 किलोग्राम ज़िंक प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन किसी भी फफूंदी नाशक दवा से कर लें एवं राइजोबियम कल्चर से उपचारित के पश्चात बुवाई करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान वैज्ञानिक विधि से खेती करते हैं तो 12 से 15 कुंतल प्रति हेक्टेयर उर्द की पैदावार होगी और किसान लाभान्वित होंगे।